

අල්ලාහ්ගේ ආගම සහ මිනිසුන්ගේ සිටින විටින අතර වෙනස කුමක්ද?

এক चीज़ है, जिस फ़ितरत-ए-सलीमा या मंतिक-ए-सलीम कहा जाता है। हर वह चीज़ जो फ़ितरत-ए-सलीमा और सही अक़ल के अनुरूप हो, वह अल्लाह की तरफ से है, जबकि हर जटिल चीज़ मानव की तरफ से है।

मिसाल के तौर पर :

यदि हमें कोई इस्लाम, ईसाई, हिन्दू या किसी और धर्म का आदमी बताए कि इस ब्रह्मांड का एक ही सृष्टिकर्ता है, उसका कोई साझी नहीं है और न उसकी कोई संतान है, वह किसी इंसान, जानवर, पत्थर या मूर्ति की शकल में इस दुनिया में नहीं आता, हमें उसकी इबादत करनी चाहिए और मुसीबत के समय उसी की शरण में आना चाहिए, तो यह वास्तव में अल्लाह का धर्म है। इसके विपरीत यदि हमें कोई मुस्लिम, ईसाई या हिन्दू धर्म गुरु बताए कि अल्लाह मानव जाति के लिए ज्ञात किसी भी रूप में अवतरित होता है, हमें किसी व्यक्ति, नबी, पुजारी या संत के माध्यम से अल्लाह की इबादत करनी चाहिए एवं उसकी शरण में आना चाहिए, तो यह मानव की तरफ से है।

अल्लाह का दीन स्पष्ट एवं तर्कसंगत है। उसमें पहेलियाँ नहीं हैं। यदि कोई धार्मिक व्यक्ति किसी व्यक्ति को मनवाना चाहे कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पूज्य हैं और उसे उनकी इबादत करनी चाहिए, तो उस धार्मिक व्यक्ति को उसे संतुष्ट करने में बहुत प्रयत्न करना पड़ेगा। फिर भी वह कभी संतुष्ट नहीं होगा। क्योंकि हो सकता है कि वह प्रश्न करे कि नबी कैसे पूज्य हो सकते हैं, जबकि वह हमारी तरह खाते-पीते थे? हो सकता है वह धार्मिक व्यक्ति अंत में यही कहे कि तुम इसे समझ नहीं सकते हो, क्योंकि यह एक जटिल बात है। जब तुम अल्लाह से मिलोगे, तो समझ जाओगे। जैसा कि आज बहुत-से लोग ईसा -अलैहिस्सलाम-, बुद्ध एवं दूसरे की इबादत को जायज़ ठहराने के लिए करते हैं। यह उदाहरण इस बात को स्पष्ट करता है कि अल्लाह के सही धर्म को पहेलियों से खाली होना चाहिए और पहेलियाँ इंसानों की तरफ से होती हैं।

अल्लाह का धर्म फ्री भी होता है। सभी को अल्लाह के घरों में इबादत करने एवं नमाज़ पढ़ने की स्वतंत्रता है। बिना इसके कि उनमें इबादत के लिए आदमी को उनकी सदस्यता लेनी पड़े और उसके लिए उसे पैसा चुकाना पड़े। इसके विपरीत यदि किसी भी इबादत स्थल में नामांकन करना पड़े और पैसा चुकाना पड़े, तो यह मानव की तरफ से है। हाँ, यदि धर्म गुरु उनसे कहें कि लोगों की सहायता के लिए उन्हें सदका (दान) करना चाहिए, तो यह अल्लाह की तरफ से है।

अल्लाह के दीन में लोग कंधे के दातों की तरह बराबर हैं। यहाँ अरबी एवं गैर अरबी, गोरे एवं काले के बीच कोई अंतर नहीं है। हाँ, अंतर है तो केवल तक़वा (परहेज़गारी) के आधार पर। इसलिए अगर कोई यह कहे कि कोई विशेष मस्जिद, कोई चर्च या मंदिर केवल गोरों के लिए है एवं कालों के लिए

